E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2020; 2(1): 137-139
Received: 21-11-2019
Accepted: 26-12-2019

डॉ० रौशन कुमार यादव
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, पूर्व शोधार्थी विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० रौशन कुमार यादव
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, पूर्व शोधार्थी विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

राजकमलक अन्यान्य कृतिक विश्लेषण

डॉ० रौशन कुमार यादव

सारांशः
मैथिली साहित्यक सरोवरमे राजकमल चौधरीक नाम प्रायः सभ विधामे कमल फूल जकाँ मुसुकाइत देखल जाइत अछि। एहिमे कोनो संदेह नहि जे राजकमक सभ रचना मैथिली साहित्यकेँ एकटा नव बाट देखौलक अछि, साहित्य मध्य पसरल जड़तापर प्रहार करब हिनक रचनाक मुख्य उद्देश्य रहल अछि। हिनक एक–एकटा कथा, उपन्यास वा कविता मैथिली साहित्यमे मणि सदृश अछि। हिनक संकलित रचनाकेँ छोड़ि बहुत रास रचना विभिन्न पत्र–पत्रिकामे छिड़िआयल अछि। एहिमे किछु निबंध तऽ किछु आलोचना, एकांकी, प्रहसन, कविता आदि अछि। एतय हिनक अन्यान्य कृति सभमे हफीम (प्रहसन), महाकवि विद्यापति (एकांकी), अन्हार घर सॉपे–साँप (निबन्ध), कथा समाप्तिक विघटन आ समस्या (समीक्षात्मक निबन्ध), हमरा लोकनिक युग आ आधुनिक मैथिली कविता (समीक्षात्मक निबन्ध), परिचय (कविता), मुक्ति प्रसंग (अनूदित कविता) आदि विवेच्य विषयक रूपमे प्रस्तुत अछि।

प्रस्तावना
राजकमलक 'हफीम' प्रहसनक अवलोकन कयला उपरान्त ई बूझना जाइत अछि जे ई एकटा विशिष्ट कोटिक रचना थिक। एहि प्रहसनक पात्र सभमे बाबू साहेब आ फुलमतिआक चरित्र–चित्रण मुख्यरूपसँ भेल अछि, ओना अमरकान्त बाबू आ आशा दाइ नामक पात्रक चर्चा सेहो कयल गेल अछि।
हास्य प्रधान नाटक किंवा एकांकीकेँ प्रहसन कहल जाइत छैक। एहिमे हास्यक प्रधानता रहैत अछि। एहि प्रहसनक पात्र सभक तुलना अँ कयल जाय तऽ हरिमोहन झाक कथा 'बाबाक संस्कार'क पात्र बाबा अर्थात् 'भगीरथ बाबा'सँ 'बाबू साहेब चौधरी'क तुलना उचित बुझाइत अछि। जहिना भगीरथ बाबा हाड़–मॉसक मजगूत आ निरोग छलाह, तहना बाबू साहेब चौधरी सेहो पचपनसँ सत्तरिक बीचक आयुक छथि आ अपन वास्तविक आयु चालिसोसँ कम साबित करबामे लागल रहैत ''वयस छनि पचपनसँ सत्तरि धरि, मुदा पुछलासँ कहै छथिन इएह आसिनमे चालिसम पूरल अछि [1]। मरबासँ ककरा नहि भय होइत छैक, मुदा मरबाक नाटक प्रस्तुत कऽ बाबू साहेब चौधरी समाजक एकटा ओहन अभिशापकेँ देखौलनि अछि, जाहिमे एकटा पिता ओ ओकर संतानक संबंधक यथार्थ रूप सोझाँ आयल अछि। एहि प्रहसनक मुख्य महिला पात्र अछि 'फुलमतिआ' जकर मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यास 'पृथ्वीपुत्र'क नायिका बिजलीसँ करब उचित बुझना जाइत अछि। जहिना बिजली सदिखन कलपू मिसरक ध्यान रखैत ओकर सेवामे लागल रहैत अछि आ अपन वास्तविक चरित्रपर कोनो दाग नहि लागऽ दैत अछि, संगहि आनन्दपूर्वक अपन जीवन आओर अपन परिवारक जीवनक निर्वाह करैत अछि, तहिना फुलमतिया सेहो बाबू साहेब लेल अपन समर्पणक भावक संग आदरक भाव रखैत बाबू साहेबक जिनगीमे घुलल–मिलल रहैत अछि। राजकमलक सभ रचनामे प्रायः भूख, आत्मरक्षा आ यौन पिपासाकेँ देखाओल गेल अछि। ई प्रहसन सेहो एहिसँ फराक नहि अछि। फुलमतिया बाबू साहेबक खबासिनक रूपमे एहि प्रसहन मध्य आयल अछि, मुदा ''फुलमतिया खबासिने टा नइँ, बाबू साहेब चौधरीक मनेजर सेहो अछि [2]।'' फुलमतिया एकटा मस्त युवती अछि आ बाबू साहेबक समर्पित खबासिन रूपमे अपन यौवनक समर्पण भाव देखौने अछि। जखन एहन बूझना जाइत अछि जे बाबू साहेब चौधरी मरि जयता तखन फुलमतिया कहैत अछि ''सत्ते हमरो मारि दिअ' सरकार! अहाँ बिना हमहीं जीबि कऽ की करब..... [3]। ई एकटा सर्व समर्पण भाव छोड़ि आओर किछु नहि अछि। फुलमतियाक गुजर–बसर बाबू साहेबक द्वारा होइत अछि तकर प्रमाण अछि, प्रहसन मध्य ई वाक्य ''काल्हिए तोरा नब नूआ कीन देने छिअउ?..आ मालिक, अहाँ नूआ–बस्तर नइँ देब, त' आन के देत [4]?'' एहि रचनामे फुलमतियाक एकटा उक्ति बड्ड मार्मिक अछि जाहिमे फुलमतिया खबासिनक रूपमे बाबू साहेबक द्वारा शोषणक विरुद्ध आ अपन बेटीकेँ पारम्परिक चलि आबि रहल शोषणसँ बचेबाक बातक कहल गेल अछि ''सभ अहीं क थिक, मुदा सभअहींक हेतु नई.... हम्मर बेटीअहाँक नई रहत [5]।'' एकटा जमीन्दार कोना छोट जाति अर्थात् फुलमतियाक जाति धानुककेँ खबासिनक रूपमे ओकर शोषण करैत अछि तकरा विरुद्ध ई अबाज एकटा पारम्परिक दोषक विरोधमे क्रान्तिकारी आह्वान थिक।

एहि रचनामे अमरकान्त बाबू आ आशा दाइ जे क्रमशः बाबू साहेब चौधरीक पुत्र वा पुत्री अछि तकर चित्रण सेहो बड्ड मार्मिक रूपसँ कयल गेल अछि। संगहि एकटा धार्मिक आडम्बरकेँ सेहो देखाओल गेल अछि, आ तकर विरोध सेहो कयल गेल अछि। एकटा माय–बाप कोना अपन संतान लेल कतेक मेहनतिसँ धनक उपार्जन आ धनक स्थापना करैत अछि आ ओहि माय–बापक अरजल धनसँ सुख–भोग करैत सन्तान अपन जीवन–यापन करैत माय–बापक प्रति तेहन कर्तव्यहीन भऽ जाइत अछि जे पिताक मरणासन्न स्थितिमे कोनो विलाप नहि करैत अछि, अपितु मरल बापक समक्ष धन लेल झगड़ा करैत अछि। एहि झगड़ामे एकटा बात ईहो उभडिकऽ आयल अछि, से अछि अपन मिथिलाक पुरुष प्रधान समाजमे नारीक अस्तित्वमे आयब, बापक अरजल धनमे अपन बखड़ा लेल भाइसँ न्यायक बात कहब। अमरकान्त कहैत अछि– ''बापक धनमे बेटीक हिस्सा नई होइत छइक। अहाँ न्यायक गप्प किआ ने गेलिअइ। 'एहिपर आशा कहैत अछि' अहाँ बेटा छिअइनि तऽ हमहुँ बेटी छिअइन [6]?

एहि प्रहसनमे एकटा महापात्रक चर्चा सेहो अछि जकरा माध्यमसँ धर्मक प्रति आडम्बरकेँ देखाओल गेल अछि आ ताहि आडम्बरपर अमरकान्त आ आशा दाइ द्वारा चोट कयल गेल अछि। बाबू साहेबक मृत्यूपरान्त महापात्रक आगमन होइत अछि आ बाबू साहेबक गोदान करबाक प्रसंगवश बाछीक ओरिआन होइत अछि आ ओहि बाछीक नागडि पकड़ि बैतरणी पार करेबाक हेतु एकटा आडम्बरकेँ ठाढ़ कयल जाइत अछि। एकर काटमे अमरकान्त बाबूक कथन अछि ''आत्मा त अविनाशी थीक, निराकार थीक, ब्रह्मक अंश थीक! 'एहिपर आशाक कथन' हँ भइआ! बेकारे गोदान–फोदानमे पइसा जिआन कएल जाए [7]।

अतः कहि सकैत छी जे एहि प्रहसनमे राजकमल विभिन्न पात्र द्वारा तत्कालीन समाजमे होइत अनीतिपूर्ण व्यवस्थापर चोट कयलनि अछि। हमरा समाजमे धर्मक नामपर एखनो बहुतरास भ्रम पसरल अछि, जकर प्रचार–प्रसार करबासँ पंडित लोकनि पाछू नहि हटैत अछि। फलतः ओ लोकनि समाजक लोककेँ धर्मक नामपर आन्हर कऽ देने अछि। मनुक्खक सभसँ पैघ देवता जन्मदाता होइत छथि। जन्मदाता अर्थात् माता–पिता प्रत्यक्ष रूपमे भगवान छथि। एहिसँ बढ़िकऽ आओर कोनो देवता नहि छथि। मुदा, वर्तमान समयमे लोभ–लालच बड्ड पैघ भऽ गेल अछि, जे धनक लोभसँ पिता–माताकेँ सेहो सन्तान मारबाक लेल उतारू भऽ जाइत अछि। माता–पिताक मरबाक कामना करैत रहैत अछि। यह एहिमे देखायल गेल अछि। अतएव ई प्रहसन एकटा समाजिक एलबम सदृश अछि।

हिनक दोसर एकांकी 'महाकवि विद्यापति' अछि, जकर प्रकाशन 'वैदेही'क जनवरी 1959 केर अंक मे भेल छल। एहि एकांकीक मुख्य पात्र सभमे शिवसिंह, महाकवि विद्यापति, लखिमा रानी आयल छथि। ओना महाकविक धर्मपत्नी मंदाकिनीक चर्चा सेहो अन्तमे कयल गेल अछि। चारि दृश्यमे विभाजित एहि एकांकीक स्थान मैथिली साहित्यमे महत्त्वपूर्ण अछि। एहि रचनाक पहिल दृश्यमे महाकवि विद्यापति पदकेर लोकप्रियताक देखाओल गेल अछि आओर राजा शिवसिंहक युद्धमे जयबाक परिस्थितिक वर्णन कयल गेल अछि। दोसर दृश्यमे युद्धभूमिक चर्चा अछि आ अतीतमे शिवसिंहक बन्दी बनबाक आ ओहिस शिवसिंहकेँ विद्यापति द्वारा मुक्त करेबाक चर्चा अछि। तेसर दृश्यमे विद्यापतिक अन्तिम यात्रा आओर लखिमाक प्रेमकेँ देखाओल गेल अछि। चारिम दृश्यमे विद्यापतिक अन्तिम समयक चर्चा आओर गंगा मायक आगमनक चर्चा अछि।

प्रथम दृश्यमे विद्यापतिक गीतक लोकप्रियतापर एहि तरहेँ प्रकाश देल गेल अछि ''विद्यापति अप्पन गीतसँ सउँसे देशऽकेँ एकता आ प्रेमऽक सूत्रमे बन्हने छथि। काव्यऽक एहि कड़िकेँ आजुक वैज्ञानिक युगऽक कोनो दण्ड, कोनो अस्त्र कोनो हथकड़ी नइँ तोड़ि सकइतछ। असामऽक चाह–बगानक मजूर–मजूरनी, बंगदेशऽक ग्राम–ग्रामक युवतिगण, बिहार आ उत्तर प्रदेशक प्रत्येक बालक–वृद्ध–स्त्री विद्यापतिऽक मोहक कविताऽक स्वरेँ जीवन–यापन करइत छथि। विद्यापतिएक पद गाबि–गाबि पानि भरइत छथि, जाँत पिसइत छथि, आँगन निपइत छथि, अहिपनऽक फूल–पात बनबइत छथि, गाछीऽक रखबारी करइत छथि, दिन–रातुक सभ काज करइत छथि [8]।

एहि एकांकीमे महाराज शिवसिंह आओर विद्यापतिक प्रगाढ़ मित्रताकें सेहो देखाओल गेल अछि ''अहाँ हमरा महाराज किअएक कहइत छी, हम तऽ अहाँक मित्र थिकहुँ, महाकवि? हम–अहाँ तऽ बाल्यावस्थामे संगहि–संग पढ़ल आ खेलाएल छी? हम तऽ अहाँक शिव थिकहुँ, महाराज तऽ कोनो तरहें नई छी [9]।

महाकवि विद्यापति अपन काव्य रचनाक संदर्भमे कहैत छथि ''सत्य ई थिक जे हम अपना मोनमे जे सद्यः अनुभव करइत छी, तही अनुभवकेँ अप्पन काव्यमे प्रवाहित करइत छी। हमरा विश्व आ प्रकृतिऽक प्रत्येक सुन्दर वस्तु सँऽ आन्तरिक सिनेह अछि, तइँ हम तकरे पद रचौ छी। भगवती हमरा जीबइ क हेतु, संघर्षऽक हेतु, कर्त्तव्य–पालनऽक हेतु प्रेरणा दइत छथि, तइँ हम भगवतीऽक पूजा–अर्चना करइत छी। दर्शन आ वेदान्तऽक शुष्क सूत्र कविताऽक कोमल कल्पनामे ढारब हमरा नीक नई लगैत छि महारानी [10]!

विद्यापति मैथिली साहित्यक आधार कवि छथि। आइ मैथिली साहित्यक विशाल वटवृक्ष जँ कोनो एकटा मुसरापर ठाढ़ अछि तऽ ओ निसन्देह विद्यापति थिकाह। काव्य रचनाक दृष्टिकोणसँ विद्यापतिक ई थीम वाक्य हिनक परवर्ती रचनाकार लेल काव्योपयोगी सिद्ध भेल अछि, अतएव एहि एकांकीमे ई उद्धरण वाक्य एकटा महत्त्वपूर्ण वर्णन अछि। एहिमे शिवसिंहक रणभूमिसँ पलायन भऽ जयबाक चर्चा अछि, लखिमारानीक विद्यापतिसँ प्रेमक आग्रहक चर्चा अछि। शिवसिंहक रणभूमिसँ पलायनक बाद लखिमा विद्यापतिसँ आग्रह करैत छथि जे अपने हमरा संग रहू हम असगरे नहि रहि सकैत छी, मुदा विद्यापति ओहि विनयकेँ अस्वीकार कऽ दैत छथि ''अहाँ युवती छी, परम सुन्दरी छी, भावुक छी आ एसकरि छी। अहाँक संग हम नई रहि सकब, महारानी [11]!

महाकवि विद्यापति विलक्षण प्रतिभाक कवि छलाह। हिनक ई प्रतिभा एहि एकांकीक माध्यमसँ तखन देखार होइत अछि जखन दिल्लीक सुल्तान महाराज शिवसिंहकेँ बन्दी बना लैत अछि आ ओहीसँ विद्यापतिक छोड़यबाक प्रयास होइत जे काव्य प्रतिभापर आधारित अछि। ओ एकटा अदृश्य भावक अवलोकन कऽ कविता रचि दिल्लीक सुलतानकेँ प्रसन्न कयने छलाह आ महाराज शिवसिंहकेँ कारासँ मुक्त करौने छलाह। दिल्लीक सुलतान द्वारा विद्यापतिक आँखिपर पट्टी बान्हि देल जाइत अछि आ परोक्ष रूपसँ तीन चारि स्त्री–कण्ठक हास्यक यौवनमय स्वर लहरी सुनाइ पडैत अछि। जलक धारामे स्नान करबाक छप–छपक शब्द क्रमशः ध्वनित होइत रहैत छैक। तखन सुल्तान द्वारा कहल जाइत अछि ''मिथिला के शायर! अब सुनाओ अपनी शायरी, अपने फन का कमाल! हरम के दरबाजे खुले हुए हैं! अपने कलाम से बताओ कि अन्दर क्या हो रहा है?

''विद्यापति संगीतक स्वरमे उत्तर दैत छथि
कामिनी करए सनाने
हेरतहिं हृदय हनए पँच–बाने
चिकुर गरए जल–धारा
जनि मुख–ससि डरें रोअए अंधरा
कुचजुग चारु चकेवा
निबऽ कुल मिलत आनि कोनो देवा
तेँ संकोचे भुज–पासे
बाँधि धरिअ उड़ि जाएत अकासे [12]!

साहित्यक इतिहासक दृष्टिकोणसँ ई गीत विशिष्ट कोटिक अछि। शृंगार रससँ ओत–प्रोत एहि गीतक मर्मक माध्यममे एहि एकांकीक माध्यमसँ बुझायल गेल अछि जे कोना विद्यापति अपन विशिष्ट काव्य प्रतिभासं शिवसिंहकेँ कारासँ छोड़ओने छलाह। एहि एकांकी चारिम आ अन्तिम दृश्यमे विद्यापतिक अन्तिम समयक

वर्णन अछि जे कोना विद्यापति अपन भक्तिक शक्तिसँ गंगा मायकेँ अपना लग बजबै छथि आ गंगामे विलीन भऽ जाइत छथि।

निष्कर्ष

अतः ई बुझाइत अछि जे ई एकांकी सफल अछि। एहिमे एक दिस जै विद्यापति–शिवसिंहक मित्रताक वर्णन अछि तऽ दोसर दिस हिनक काव्य प्रतिभाक सेहो वर्णन अछि। एहिमे भक्तिक वर्णन अछि तऽ दोसर दिस हिनक जीवन वर्णन अछि। मैथिली साहित्यमे राजकमलक दू टा समीक्षात्मक निबन्ध प्रसिद्ध अछि। पहिल अछि 'कथा–समाप्तिक विघटन आ समस्या' आ दोसर अछि 'हमरा लोकनिक युग आ आधुनिक मैथिली कविता'। साहित्यक दृष्टिकोणसँ ई दुनू निबन्ध महत्त्वपूर्ण अछि।

संदर्भ सूचीः

1. हकीम, वैदेही, मार्च– 1958, पृ०– 107
2. तत्रैव, पृ०– 108
3. तत्रैव, पृ०– 109
4. तत्रैव, पृ०– 110
5. तत्रैव, पृ०– 110
6. तत्रैव, पृ०– 114
7. तत्रैव, पृ०– 112
8. महाकवि विद्यापति, वैदेही, जनवरी– 1959, पृ०– 32
9. तत्रैव, पृ०– 33
10. तत्रैव, पृ०– 34
11. तत्रैव, पृ०– 40
12. तत्रैव, पृ०– 42